हिंदी दैनिक

न्यूज़ वायरस

वर्ष : 12 अंक : 161 | देहरादून, सोमवार, 18 दिसंबर, 2023 | मूल्य : एक रुपया | पृष्ठ : 08

हिमालय सहित पूरी पृथ्वी बचाने हेतु चिपको आन्दोलन के साथ ब्लैक कार्बन आन्दोलन समय की जरूरत : डा०पी एस नेगी, वैज्ञानिक 3

'आदर अभिनन्दन, आभार मिशन सिलक्यारा' में श्रमिकों का अभिनंदन : मुख्यमंत्री धामी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 18 दिसंबर , मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित 'आदर अभिनन्दन, आभार मिशन सिलक्यारा'' कार्यक्रम में श्रमिक संगठनों द्वारा मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तरकाशी के सिलक्यारा सुरंग से 41 श्रमिकों को सकुशल निकालने के लिए सिलक्यारा रेस्क्यू में लगी केन्द्र एवं राज्य सरकार की सभी एजेंसियों द्वारा सराहनीय कार्य किया गया। इस मुश्किल घड़ी में श्रमिकों ने जो धैर्य रखा वो हम सभी को हमेशा प्रेरित करने का काम करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और श्रमिकों की हिम्मत से ही यह रेस्क्यू अभियान सफल हुआ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री इस रेस्क्यू ऑपरेशन की उनसे प्रत्येक दिन अपडेट लेते थे और श्रमिकों को सकुशल बाहर निकालने के लिए विशेषज्ञों और आवश्यक उपकरणों की जो भी आवश्यकता पड़ी, प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में शीघ्रता से प्राप्त होते रहे। इस रेस्क्यू अभियान के दौरान प्रधानमंत्री कार्यालय की टीम भी नियमित तौर पर मौके पर रही। केन्द्रीय राज्य मंत्री जनरल वीके.सिंह भी इस रेस्क्यू अभियान के दौरान लगातार सिलक्यारा में मौजूद रहे। केन्द्रीय एवं राज्य की एजेंसियों द्वारा समन्वय के साथ कार्य कर इस ऑपरेशन को सफल बनाया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी श्रमिकों के परिजनों ने उस चुनौतीपूर्ण समय में जिस संयम और साहस का परिचय दिया, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वो कम है। उन्होंने इस बचाव अभियान में लगे सभी लोगों का भी राज्य की जनता की ओर से आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि टनल में फंसे श्रमिकों के धैर्य ने इस अभियान को सफल बनाने के लिए सभी का मनोबल बढ़ाया। अनेक प्रयासों के बाद भी जब समय अधिक लग रहा था तो, श्रमिकों ने कहा कि अधिक समय लगने की उनको चिंता नहीं है, प्रयास हो कि वे सुरक्षित बाहर निकल जाएं। श्रमिकों के इन शब्दों ने रेस्क्यू अभियान में लगे सभी लोगों का हौंसला बढ़ाया। उन्होंने कहा कि हमारे श्रमिक एक बेहतर और समृद्ध भारत की नींव तैयार कर रहे हैं। "श्रमेव जयते" के मंत्र को ध्यान में रखकर केन्द्र व राज्य सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में

श्रमिकों के कल्याण के लिए निरंतर कटिबद्ध है। केंद्र सरकार ने श्रम कानूनों में अनेक बदलाव किए हैं। श्रम सुविधा पोर्टल शुरू किया गया है, जिसके अंतर्गत आठ अहम श्रम कानूनों को एक कर उनके सरलीकरण का काम किया गया है। आज हर श्रमिक को एक विशेष लेबर आइडेंटिफिकेशन नंबर दिया जा रहा है ताकि उसकी पहचान की जा सके जिससे उन्हें योजनाओं का लाभ मिल सके। श्रमिक और नियोजक के बीच बेहतर तालमेल हो सके इसके लिए नेशनल सर्विस पोर्टल भी बनाया गया है।

सचिव श्रम आर. मीनाक्षी सुंदरम ने कहा कि मिशन सिलक्यारा एक चुनौतीपूर्ण टास्क था। पूरे देश और दुनिया की नजरें इस पर थी। उन्होंने कहा कि इस मिशन को सफल बनाने के लिए मुख्यमंत्री ने रेस्क्यू में लगे लोगों का लगातार मनोबल बढ़ाया। कल्याणकारी राज्य हर वर्ग के प्रति संवेदनशील होता है, इसका परिचय मुख्यमंत्री ने दिया। उन्होंने कहा कि श्रम विभाग द्वारा शीघ्र ही श्रम विभाग की चौपाल आयोजित की जायेगी।

इस अवसर पर भारतीय मजदूर संघ के सुमित सिंघल ने कहा कि सिलक्यारा मिशन में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जिस तरह मौके पर डटे रहे और हर पल की अपडेट लेते रहे, उन्होंने अपने जीवनकाल में किसी रेस्क्यू अभियान में इस दृढ़ता से कार्य करने वाले किसी मुख्यमंत्री को नहीं देखा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने किस तरह श्रमिकों की चिंता की और उनका जीवन बचाया, यह सबने देखा। उन्होंने कहा कि इस मिशन की सफलता के बाद श्रमिकों का मनोबल बहुत बढ़ा है। ट्रेड यूनियन कॉर्डिनेशन के अध्यक्ष श्री नवीन कुरील ने कहा कि सिलक्यारा रेस्क्यू ऑपरेशन को सफल बनाने के लिए मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने मौके पर रहकर जिस तरह सबका मनोबल बढ़ाया वह सराहनीय था। उन्होंने कहा कि इस मिशन की सफलता के बाद सबके दिलों में उनके लिए अलग जगह बनी है।

इस अवसर पर श्रमायुक्त सुश्री दीप्ति सिंह, विभिन्न श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधि और श्रमिकों के परिजन उपस्थित थे।

उत्तराखंड में 20 दिसंबर तक ऐसा रहेगा मौसम का हाल

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

उत्तराखंड 18 दिसंबर : उत्तराखंड में ठंड का सितम जारी है। चारधाम समेत पर्वतीय इलाके बर्फ की चादर में लिपटे हैं। बदरीनाथ केदारनाथ में तापमान माइनस में चला गया है, जिससे यहां कड़ाके की ठंड पड़ रही है। यहां लगातार हो रही बर्फबारी से ठिठुरन बढ़ गई है। कई इलाकों में तो नदी और झरने भी जमने लगे हैं।

उत्तराखंड के पर्वतीय जनपदों में पिछले कुछ दिन से तेजी के साथ तापमान गिर रहा है। बीते दिन चमोली जिले के नीती गांव में काली मंदिर के पास झरने का पानी जम गया। चमोली से लेकर औली तक लगातार हो रही बर्फबारी से उत्तराखंड की वादियां खूबसूरत हो गई हैं। औली में लगातार हो रही बर्फबारी से सड़कों पर

फिसलन बढ़ गई है। बीआरओ के कर्मचारियों ने बर्फ हटाने का काम भी शुरू कर दिया है।मौसम विभाग का कहना है कि अगले कुछ दिन प्रदेश में मौसम शुष्क रहेगा, लेकिन ठंड से राहत नहीं मिलेगी। शीतलहर चलने से लोगों की परेशानी बढ़ेगी।

पर्वतीय क्षेत्रों में पाला और मैदानों में मध्यम कोहरा दुश्वारियां बढ़ा सकता है। पारे में और गिरावट आने के आसार हैं। उत्तराखंड में बीते काफी समय से मौसम शुष्क बना हुआ है। मैदानी क्षेत्रों में चटख धूप खिल रही है। हालांकि, चोटियों पर हल्के हिमपात का दौर जारी है। मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार प्रदेश भर में 20 दिसंबर तक मौसम शुष्क रहेगा, इस दौरान शीतलहर के चलते पहाड़ से लेकर मैदान तक सुबह-शाम के समय ठंड सताएगी। इसके अलावा दोनों समय के तापमान में गिरावट भी देखने को मिलेगी।

23 से 27 प्रतिशत महंगी होगी उत्तराखंड में बिजली

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

■ एक अप्रैल 2024 से लागू होंगी नई दरें

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , ऊर्जा राज्य में अगले साल से बिजली महंगी हो जाएगी. उत्तराखंड पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीसीएल) की बोर्ड बैठक में बिजली दरों में 23 से 27 फीसदी तक बढ़ोतरी के प्रस्ताव पर सहमति बन गई है. इसके बाद यूपीसीएल दरें बढ़ाने को लेकर उत्तराखंड विद्युत नियामक आयोग में याचिका दायर करेगा। नई बिजली दरें 1 अप्रैल 2024 से लागू होंगी. शनिवार को ऊर्जा भवन में अपर मुख्य सचिव एवं निगम अध्यक्ष राधा रतूड़ी की अध्यक्षता में बोर्ड बैठक हुई। जिसमें बिजली दरें बढ़ाने का प्रस्ताव रखा गया. बैठक में यूपीसीएल ने बिजली दरें बढ़ाने के पीछे करोड़ों रुपये की देनदारी और सेंट्रल पूल, एसजेवीएनएल, यूजेवीएनएल, टीएचडीसी, एनटीपीसी से महंगी बिजली मिलने का तर्क दिया.राज्य की मांग पूरी करने के लिए यूपीसीएल को बिजली खरीदने के लिए 1281 करोड़ रुपये अधिक चुकाने होंगे। इसकी भरपाई के लिए अगले साल से बिजली दरें 23 से 27 फीसदी तक बढ़ाने की सिफारिश की गई. बोर्ड बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गयी. बोर्ड सदस्यों के बीच चर्चा के बाद यूपीसीएल विद्युत नियामक आयोग में याचिका दायर करेगा। जनसुनवाई के बाद आयोग बिजली दर पर फैसला लेगा. बैठक में यूपीसीएल के प्रबंध निदेशक अनिल कुमार समेत कई निदेशक मौजूद रहे।

VoW 2023 comes to a befitting end

By News Virus Network

Those of us who were at the Hotel Madhuban for Day 2 of the Valley of Words began the morning with ragas performed by the ITC SRA: Swarnendu Mondal on the sarod and Ashis Paul on the tabla wove magic for the audience. Chief Guest Sharmila Bhartari was effusive in her praise as the day began with music that transcends words. The Children's Vertical Performance at the VoW Main Stage, chaired by Jyoti Dhawan, saw students of Dehradun's leading schools performing creative reading interpretations of the books shortlisted for the Awards this year. A play around Jhupli's Honey Box by Mount Fort Academy was followed by a lively discussion with the author-translator, VoW Awardee Achintyarup Ray, and students of HimJyoti School.Bhaga Hua Ladka featured VoW Awardee Amrita Bera in conversation with Anjan Ray as the chair and Sachin Chauhan as the discussant on the nuances of Dalit literature, focusing particularly on the prolific brilliance of the text's original author Manoranjan Byapari and the translator's personal connect with him. The discourse expanded to encompass significant historical events such as the Partition of India and religious violence.

Profound tributes to Pradeep Singh were offered in "Sals of the Valley". Manoj Barthwal fondly remembered their enduring friendship of 36-37 years, nurtured during family outings to Sahastradhara. Satish Sharma and Arun Pratap Singh appreciated Pradeep's significant contributions to the Garhwal Post. Kulbhushan Kain celebrated Pradeep as one of the finest school-level cricket players in Dehradun. A heartfelt memorial to SK Das, "The Man, The Legend," featured touching insights by Mrs. SK Das who shared touching insights that his fervour for reading and writing originated during his time at St. Stephen's. Dr BK Joshi reminisced about their joint initiation of Doon Library, highlighting Mr Das's constant encouragement for the library's growth. Col. Duggal remembered his vibrant enthusiasm towards the Arts and Kalakendra. Together, these heartfelt reflections painted a rich and diverse portrait of the legacies of these Legends of Doon in the hearts of those who knew and admired him.

Shalini Rao led a workshop on the Navrasa, choreographing a dance to 'Ae Giri Nandini' with 45 women in the audience dancing together. The group dance at the end proved her introductory comment that Rasa is actually in the audience, and not merely in the author or artiste. The Iti Nritya showcase later enchanted the audience with Mohiniattam by Srijaini Ghosh (Mohiniattam), and a fire-based Kuchipudi set by Venu Ayachit.

The Journey of Hindi Language Journalism in India with VoW Awardee Mrinal Pande in conversation with Indu Pande and Sanjay Abhigyan saw the author sharing her insights with a full house, unfolding varied facets of Indian journalism with the first Hindi newspaper published to the ever-changing genres of journalism. Mrinal Pande commented on how Hindi like the Himalayas, has become hollow without its local nuances; she also said that therefore Bollywood film music is useful in perpetuating Hindi as the language of the common people. "Looking Beyond Chipko", chaired by Chandi Prasad Bhatt, delved into climate change and environment with by Rajendra Dobhal, Ruchi Badola and PS Negi about the mission to safeguard the Himalayas and its glaciers from hazardous elements like black carbon: "We must employ local solutions to solve global problems." An exhibition showcasing diverse handicrafts and the work of local artisans highlighted the promotion of rural products and Uttarakhand's rural culture. Various trusts and societies supporting women, the elderly, and organic initiatives participated.

The day saw multiple book launches, each adding a unique flavor to the literary offering. Ira Chauhan and Yogesh Kumar discussed with the author of Wanderings in the Land of Mist Anmol Jain the evolving landscape and deteriorating environmental beauty of the Queen of Hills, Mussoorie. Ratna Manucha and Sandhya Awasthi had a broad-ranging conversation with Kulbhushan Kain about A Lifetime in Schools, and Dipankar Gupta moderated the launch of A Diplomats' Garden by Aftab Seth, providing insight into the connections between personal experiences, cultural diversity, and the shaping of an individual's worldview,

in which he wryly remarked: "There is so much that happens even in a day, let alone a whole life — and my life has been a masala, so how much can you possibly include in a single book?" Sushil Kumar Awasthi chaired the launch of Call of the Jungle – Journey of an IFS Officer by Ruchi Singh, with Surabhi Sapra moderating the conversation about the hardships that families endure due to the

demanding nature of an officer's life. Ek Naya Ishvar by Tajender Luthra, moderated by Bharti Mishra with chair Anil Raturi, brought in the famous quote by Paul Valéry that: 'A poem is never finished, only abandoned.' Shravan Kumar and Aditi Bisht presented Mugdha Sinha's Postcard Poems with an underlying desire for readers to engage with poetry on a multi-dimensional level. Shyam Saran offering a compelling exploration of the author's unique perspective as reflected in his literary work.

The afternoon session commenced with the literary symphony "Kavita Tere Kitne Roop," hosted by Someshwar Pandeya. Distinguished poets and authors, including Mugdha Sinha, Deepanjali Singh, Buddhinath Mishra, Neelesh Raghuvanshi, Tajender Luthra, Indu Pande, and Sachin Chauhan, shared their poetic insights. Their poems explored a diverse range of topics, encompassing history, culture, environment, and beyond, providing deep understanding of the various dimensions of life and society.

A parallel roundtable discourse was moderated by Dr Amna Mirza on the National Education Policy (NEP), chaired by N Ravi Shanker, who highlighted issues of flexibility and innovative thinking in his questions to the panelists. Surekha Dangwal from Doon University highlighted how balance between natural and social science and the contemporary significance of Indian knowledge systems. Rajendra Dobhal from SHRU mentioned that knowledge has been perceived as economic power. Sanjay Jasola from Graphic Era Hill University focused on how youth should become 'job-givers' instead of 'job-seekers' with a fourth Industrial Revolution. Ram Sharma from UPES discussed the policy's focus on problem-solving, and Narpindra Singh from Graphic Era University spoke about the importance of passion in educational endeavors.

"The World of Translations", chaired by Anjan Ray, featuring panelists Amrita Bera and Lalit Kumar, with a discussion led by Bijoya Sawian brought up the various aspects of 'anuvaad'. Amrita Bera shared her journey

■ continuous page 3

into translation and Anjan Ray explored the practical aspects, discussing how translation can be a means of earning a livelihood. Lalit Kumar highlighted the pivotal role of translation in bridging communication gaps. "A Lifetime in Literature & Politics: Ramesh Pokhriyal 'Nishank' saw this gentleman address various aspects like his unique approach to time management—revealing that he often writes in his car due to time constraints, with Dr. Sushil Upadhyay. The day concluded with a grand valediction, graced by Union Minister Ramesh Pokhriyal 'Nishank,' ACS Radha Raturi, DGP Abhinav Kumar, CMD of REC Vivek K Dewangan. The Master of Ceremonies for the evening was Anoop Nautiyal. This concluded the Valley of Words festival's annual celebration of the Word — and beyond!

हिमालय सहित पूरी पृथ्वी बचाने हेतु चिपको आन्दोलन के साथ ब्लैक कार्बन आन्दोलन समय की जरूरत : डा0पी एस नेगी, वैज्ञानिक

डा0पी एस नेगी, पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ है तथा हिमालय के ग्लेशियर में भारत की प्रथम ब्लैक कार्बन वेधशाला स्थापित करने हेतु जाने जाते हैं । वर्तमान समय में कई राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संगठनों से जुड़े हैं

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 18 दिसंबर , होटल मधुवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय साहित्य,संस्कृति त्योहार के दौरान पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित गोष्ठीः अध्यक्ष- श्री चंडी प्रसाद भट्ट,चिपको आन्दोलन प्रणेता, क्यूरेटर- डा राजेन्द्र में डोभाल,कुलपति स्वामीराम हिमालयन विश्वविद्यालय, विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिक - डा पी एस नेगी ।

पृथ्वी पर्यावरण संकट का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण (विशेषकर कोयला,पेट्रोल,डीज़ल,मिट्टी तेल के उपयोग से उत्सर्जित ब्लैक कार्बन द्वारा वातावरण तापमान वृद्धि-ग्लोबलवार्मिंग), और वनों की कटाई जैसी समस्याएं पृथ्वी को विनाश के कगार पर ला खड़ी कर रही हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए हमें एक बार फिर से चिपको आंदोलन की तरह ब्लैक कार्बन द्वारा वातावरण तापमान वृद्धि-ग्लोबलवार्मिंग रोकने हेतु एक बड़ा जन आंदोलन शुरू करने की जरूरत है ।

चिपको आंदोलन 1970 के दशक में उत्तराखंड में शुरू हुआ एक पर्यावरण आंदोलन था। इस आंदोलन में महिलाओं ने वनों की रक्षा के लिए पेड़ों को गले लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। चिपको आंदोलन ने पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वन विनाश से जहाँ पर्यावरणीय सेवाओं (स्वच्छ हवा व पानी) व मूलभूत दैनिक जरूरतों रोटी,कपड़ा और मकान में कमी आ जाती है वहीँ ब्लैक कार्बन जनित जलवायु परिवर्तन से पृथ्वी व इंसान का अस्तित्व ही खतरे में पड़ रहा है । फलतः वर्तमान में वातावरण में मौजूद ब्लैक कार्बन के कारण उत्पन्न जलवायु परिवर्तन की चुनौती क्षेत्रीय,राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बन गया है। भारत में प्रति वर्ष ब्लैक कार्बन जनित वायु प्रदुषण से 21 लाख लोगों की मौत होती है । इसीलिए वर्तमान में वातावरण में मौजूद ब्लैक कार्बन के कारण उत्पन्न जलवायु परिवर्तन की चुनौती क्षेत्रीय,राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बन गया है। और इसीलिए G 20 से लेकर COP28 जैसे अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में पृथ्वी-इंसान बचाने हेतु जीवाश्म इंधन से उत्पन्न ब्लैक कार्बन में चरण बद्ध तरीके से कमी पर सहमति प्रकट कर दी गई है ।

स्पष्ट है जंगल संरक्षण के साथ-साथ हमें ब्लैक कार्बन नियंत्रण पर भी ध्यान देने की सख्त

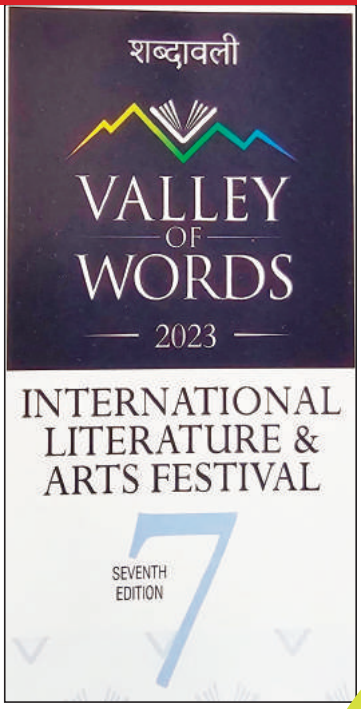

जरूरत है। ब्लैक कार्बन, जिसे सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर (SPM) भी कहा जाता है, पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद एक प्रकार का प्रदूषक है। यह कोयला, तेल (पेट्रोल,डीज़ल,मिट्टी तेल), और अन्य जीवाश्म ईंधनों के दहन से उत्पन्न होता है। ब्लैक कार्बन के कारण वायु प्रदूषण होता है। ब्लैक कार्बन के कण सांस के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर हमारे महत्वपूर्ण अंगो (हृदय,लीवर,फेफड़ा,किडनी आदि) को प्रभावित कर अस्थमा,कैंसर जैसी प्राणघातक बीमारियों को जन्म देते हैं । वहीं दूसरी ओर वातावरण में मौजूद ब्लैक कार्बन दिन के समय सूर्य की ऊष्मा को सोख कर रात के समय इन्फ्रारेड किरणों रूप में पुनः वातावरण में उत्सर्जन कर वातावरण का तापमान कृत्रिम रूप से बढ़ा देता है, जिसको वैश्विक स्तर ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है और जो जलवायु परिवर्तन का दूसरा सबसे बड़ा मानवीय कारण है। पहला कारण ग्रीन हाउस गैस है । डा०पी एस नेगी, वैज्ञानिक द्वारा गंगोत्री ग्लेशियर के निकट (चीरवासा व भोजवासा) स्थापित भारत की पहली बेधशाला में ब्लैक कार्बन की मात्रा 4.62 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक मापी गई ।

अन्तराष्ट्रीय साहित्य,संस्कृति उत्सव के दौरान पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित गोष्ठी मे पेनालिस्ट प्रतिभागिता (श्री चंडी प्रसाद भट्ट- चिपको अन्दोलन प्रणेता, डा रुचि बडोला-डीन विज्ञान फैकल्टी,वन्य जीव संस्थान,डा राजेन्द्र डोभाल- कुलपति- स्वामी राम हिमालयन यूनिवर्सिटी व डा पी एस नेगी- पर्यावरणविद व पूर्व वैज्ञानिक- वाडिया संस्थान)

पृथ्वी सहित पर्यावरण संरक्षण हेतु हमें ब्लैक कार्बन नियंत्रण पर अधिक ध्यान देने की सख्त जरूरत है। ब्लैक कार्बन, जिसे सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर (SPM) भी कहा जाता है, पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद एक प्रकार का प्रदूषक है। यह कोयला, तेल (पेट्रोल,डीज़ल,मिट्टी तेल), और अन्य जीवाश्म ईंधनों के दहन से उत्पन्न होता है। ब्लैक कार्बन के कारण वायु प्रदूषण होता है। ब्लैक कार्बन के कण सांस के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर हमारे महत्वपूर्ण अंगो (हृदय,लीवर,फेफड़ा,किडनी आदि) को प्रभावित कर अस्थमा,कैंसर जैसी प्राणघातक बीमारियों को जन्म देते हैं । वहीं दूसरी ओर वातावरण में मौजूद ब्लैक कार्बन दिन के समय सूर्य की ऊष्मा को सोख कर रात के समय इन्फ्रारेड किरणों रूप में पुनः वातावरण में उत्सर्जन कर वातावरण का तापमान कृत्रिम रूप से बढ़ा देता है, जिसको वैश्विक स्तर ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है और जो जलवायु परिवर्तन का दूसरा सबसे बड़ा मानवीय कारण है। पहला कारण ग्रीन हाउस गैस है । डा०पी एस नेगी, वैज्ञानिक द्वारा गंगोत्री ग्लेशियर के निकट (चीरवासा व भोजवासा) स्थापित भारत की पहली बेधशाला में ब्लैक कार्बन की मात्रा 4.62 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर मापी गई । भारत में प्रति वर्ष ब्लैक कार्बन जनित वायु प्रदुषण से 21 लाख लोगों की मौत होती है

वैज्ञानिकों के एक अनुमान के अनुसार पृथ्वी पर प्राकृतिक कारणों से पूर्व 5 विलोपनो के बिपरीत भविष्य में घटित होने वाला 6वां विलोपन (mass extinction) मानवीय कार्य कलापों के कारण होंगा.

ब्लैक कार्बन नियंत्रण के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगाः

वन संरक्षण हेतु चिपको आंदोलन की तरह इंसान-पृथ्वी बचाने हेतु ब्लैक कार्बन आन्दोलन को सफल बनाने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगाः

गैर पारंपरिक उर्जा /ग्रीन उर्जा का उपयोगः केंद्र व राज्यों सरकारों द्वारा प्रदुषण रहित सभी गैर पारंपरिक उर्जा /ग्रीन उर्जा (सोलर,विंड,ग्रीन एनर्जी ,इलेक्ट्रिक वाहन आदि)का अधिकाधिक उपयोग हेतु प्रोत्साहन आवश्यक है .

जन जागरूकताः ब्लैक कार्बन आन्दोलन को सफल बनाने के लिए सबसे पहले हमें जन जागरूकता फैलाने की जरूरत है। हमें लोगों को पर्यावरण संकट की गंभीरता के बारे में बताना होगा और उन्हें ब्लैक कार्बन के हानिकारक प्रभाओं के बारे में समझाना होगा।

संगठनः दूसरे ब्लैक कार्बन आन्दोलन को सफल बनाने के लिए हमें एक मजबूत संगठन की जरूरत है। हमें विभिन्न गैर सरकारी व सरकारी संगठनों और समुदायों को एक साथ लाने की जरूरत है।

राजनीतिक समर्थनः ब्लैक कार्बन आन्दोलन को सफल बनाने के लिए हमें राजनीतिक समर्थन की भी जरूरत है। हमें ब्लैक कार्बन नियंत्रण हेतु कड़े कानून बनाने और उन्हें लागू करने के लिए प्रेरित करना होगा।

जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमीः ब्लैक कार्बन के उत्सर्जन को कम करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी करना है। हम इस लक्ष्य को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ाकर प्राप्त कर सकते हैं।

उद्योगों में उत्सर्जन नियंत्रणः उद्योगों में ब्लैक कार्बन के उत्सर्जन को कम करने के लिए हमें कड़े उत्सर्जन नियंत्रण मानकों को लागू करना होगा। व्यक्तिगत स्तर पर जागरूकताः ब्लैक कार्बन नियंत्रण में व्यक्तिगत स्तर पर जागरूकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें कोयला, तेल, और अन्य जीवाश्म ईंधनों के उपयोग को कम करने के लिए प्रयास करने चाहिए।

चिपको आंदोलन और ब्लैक कार्बन नियंत्रण दोनों ही पृथ्वी को बचाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हमें इन दोनों आंदोलन को एक साथ चलाने की जरूरत है।

उपरोक्त अंतर्राष्ट्रीय साहित्य,संस्कृति त्योहार का आयोजन Valley of Words नामक संस्था द्वारा किआ गया जिसका उद्घाटन उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह द्वारा किया गया व समापन मुख्य मंत्री माननीय पुष्कर सिंह धामी द्वारा किआ गया.

दुश्मन के घर में घुस कर कार्रवाई करने में समर्थ है सेना : धामी

गढ़वाल और कुमांऊ में 56 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण सैनिक पुत्र धामी ने किया शहीदों को नमन

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 18 दिसंबर , मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विजय दिवस के अवसर पर शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। विजय दिवस पर मुख्यमंत्री ने भूतपूर्व सैनिकों, वीरांगनाओं को शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विजय दिवस के अवसर पर आयोजित निबंध एवं कला प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को भी मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर घोषणा की कि सैनिक आश्रितों को भर्ती पूर्व दिये जाने वाले प्रशिक्षण के दौरान भोजन व्यवस्था के लिए प्रतिदिन दी जाने वाली धनराशि 80 रूपये से बढ़ाकर 225 रूपये प्रति प्रशिक्षणार्थी की जायेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दिन भारतीय सेना के वीर जवानों के अदम्य साहस, शौर्य और पराक्रम का उत्सव मनाने का दिन है। 1971 का युद्ध अमानवीयता पर मानवता, दुराचार पर सदाचार और अन्याय पर न्याय की जीत का युद्ध था। आज ही के दिन वर्ष 1971 में पाकिस्तान के 93,000 से अधिक सैनिकों ने हमारे वीर बहादुर सैनिकों के समक्ष घुटने टेके थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड की भूमि, देवभूमि होने के साथ-साथ पराक्रम और बलिदान की भूमि भी है। 1971 के भारत-पाक युद्ध में वीर भूमि उत्तराखंड के 255 जवानों ने भारत मां की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। इस युद्ध में अपने अदम्य साहस और पराक्रम का परिचय देने वाले प्रदेश के 74 सैनिक विभिन्न वीरता पदकों से सम्मानित हुए थे। ऐसे सभी वीरों के बलिदान की अमर गाथाएं आज भी हमारे युवाओं को प्रेरणा देने का काम करती हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन के अनुरूप देहरादून में पांचवे धाम सैन्य धाम का निर्माण कार्य प्रगति पर है। यह धाम उन सभी वीरों को हमारी ओर से एक विनम्र श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना तिरंगे की शान के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। यह सैन्य धाम आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्र आराधना के एक दिव्य प्रेरणा पुंज के रूप में कार्य करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जवानों का मनोबल तेजी से बढ़ा है। आज हमारे सैनिक अत्याधुनिक

हथियारों से लैस हैं, उनकी सहायता और सुरक्षा के लिए विश्व स्तरीय उपकरण उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। आज हमारे सैनिकों का मनोबल इतना ऊंचा है कि वो दुश्मन के घर में घुस कर उस पर कार्रवाई करने में समर्थ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड के मुख्य सेवक के रूप में उनका प्रयास रहता है कि सैन्य परिवारों के लिए विशेष योजनाएं बने, जिससे एक सैनिक को युद्ध में लड़ते समय अपने परिवार की चिंता न हो। राज्य सरकार प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में सैनिकों और उनके परिवार को मिलने वाली सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार ने उत्तराखण्ड के वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों को देय एकमुश्त अनुदान राशि में भी वृद्धि की है। जिसके तहत परमवीर चक्र से सम्मानित सैनिक को 30 लाख से 50 लाख, महावीर चक्र 20 लाख से 35 लाख, कीर्ति चक्र 20 लाख से 35 लाख, वीर चक्र और शौर्य चक्र 15 से 25 लाख और सेना गेलेन्ट्री मेडल 07 लाख से 15 लाख करने को मंजूरी दी गई। उत्तराखण्ड से द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों की वीरांगनाओं एवं वेटरन की पेंशन प्रतिमाह 8 हजार रूपये से बढ़ाकर 10 हजार रूपये की है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और उनकी विधवाओं की प्रतिमाह पेंशन 21 हजार से बढ़ाकर 25 हजार की गई है।

इस अवसर पर सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी, विधायक खजान दास, सचिव सैनिक कल्याण दीपेन्द्र चौधरी, जिलाधिकारी देहरादून सोनिका, एसएसपी अजय सिंह, निदेशक सैनिक ब्रिगेडियर कल्याण अमृत लाल (से.नि), मेजर जनरल सम्मी सबरवाल(से.नि), रियर एडमिरल ओ.पी.सिंह राणा(से.नि), ब्रिगेडियर के.जी बहल(से.नि) एवं पूर्व सैन्य अधिकारी और वीरांगनाएं उपस्थित थे।

भारत में बढ़ी 'इनेमूरी' नींद की डिमांड ! आपको चाहिए क्या

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , ऑफिस में लोगों पर बढ़ता काम का प्रेशर उन्हें विभिन्न तरह की मानसिक और शारीरिक समस्याओं में फंसा सकता है. इससे निपटने के लिए कर्मचारी अपने-अपने हिसाब से प्रयास करते रहते हैं. मगर, अब एक सर्वे से स्पष्ट हुआ है कि देश के प्राइवेट सेक्टर में काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी ऑफिस में थकान को मिटाने के लिए नींद का एक छोटा ब्रेक चाहते हैं. उनका कहना है कि ऐसा करने से वह स्वस्थ रहेंगे और ज्यादा बेहतर काम कर सकेंगे.

जापानी 'इनेमूरी' की डिमांड क्यों बढ़ी

जापान में यह संस्कृति 'इनेमूरी' के नाम से जानी जाती है. जापानी दफ्तरों में लोग काम के दौरान शार्ट नैप ब्रेक लेते हैं. इससे वहां के कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिली है. साथ ही जापान का वर्क कल्चर भी स्वस्थ रहता है. जीनियस कंसल्टेंट्स की रिपोर्ट के अनुसार, इंडिया में भी अब 'इनेमूरी' की डिमांड की जाने लगी है. इससे लोगों को न सिर्फ थकान मिटाने में मदद मिलेगी बल्कि लोगों की काम करने की क्षमता में भी इजाफा होगा. कर्मचारी स्वस्थ रहेंगे और उनमें ऑफिस को लेकर कोई भी नकारात्मकता नहीं रह जाएगी.

एक घंटे का पावर नैप दें कंपनियां

आंकड़ों के अनुसार, सर्वे में शामिल हुए लगभग 94 फीसदी लोगों ने ऑफिस में काम के घंटों के बीच एक छोटे पावर नैप की मांग की. सिर्फ 3 फीसदी लोगों ने ही इसे नकार दिया. कर्मचारियों ने बताया कि वह रोजाना काम के दौरान तनाव का सामना करते हैं. इसके चलते उन्हें बहुत जल्द थकान महसूस होने लगती है. इसके चलते वह काम के दौरान कई ब्रेक लेते हैं.

इन सेक्टर के कर्मचारियों की जानी गई राय

इस सर्वे में बैंकिंग, फाइनेंस, कंस्ट्रक्शन, इंजीनियरिंग, शिक्षा, एफएमसीजी, होटल, एचआर, आईटी, बीपीओ, लोजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग, मीडिया, आयल एवं गैस और फार्मा सेक्टर के कर्मचारियों की राय जानी गई. सर्वे में 82 फीसदी कर्मचारियों ने माना कि यदि कंपनियां पावर नैप को मंजूरी देती हैं तो उनकी उत्पादकता बढ़ जाएगी. लगभग 60 फीसदी कर्मचारी रोजाना काम के दौरान तनाव में रहते हैं. सिर्फ 27 फीसदी कर्मचारियों ने कहा कि उन्हें आज तक काम के दौरान थकान या तनाव नहीं महसूस हुआ.

उत्तराखंड से जुड़ा है मुख्यमंत्री का अनोखा रिकॉर्ड !

22 सालों में सर्वाधिक 11 मुख्यमंत्री ने ली शपथ

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , देश की सियासत में एक रोचक रिकॉर्ड की आज हम आपको बता रहे हैं। जिसका सीधा रिश्ता जुड़ा है 70 विधानसभा वाले उत्तराखंड राज्य से ... यहाँ सबसे ज्यादा और कम वक्त में मुख्यमंत्री बदले गए , जहां कई मुख्यमंत्रियों ने अपना 5 साल का कार्यकाल पूरा नहीं किया. इतना ही नहीं 5 साल के कार्यकाल के दौरान तीन-तीन मुख्यमंत्रियों ने शपथ ली और एक मुख्यमंत्री ने तो 3 बार शपथ लिया है. ये सब हुआ है उत्तराखंड राज्य में जहां बीते 22 सालों में 11 मुख्यमंत्रियों ने बतौर मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है.

जानिए कब कौन बना मुख्यमंत्री ?

बता दें कि उत्तराखंड राज्य का गठन 9 नवंबर 2000 को हुआ था. उस वक्त नित्यानंद स्वामी राज्य के पहले मुख्यमंत्री बनाए गए थे. उनका कार्यकाल 9 नवंबर 2000 से 29 अक्टूबर 2001 तक यानी कुल 354 दिनों का था. उनके बाद भगत सिंह कोश्यारी को नया सीएम बनाया गया था. उनका भी कार्यकाल चार महीने का ही था. उसके बाद 2002 में हुए राज्य के पहले विधानसभा चुनाव में सत्तासीन बीजेपी की हार हुई थी और कांग्रेस की जीत हुई थी. तब कांग्रेस की तरफ से नारायण दत्त तिवारी राज्य के मुख्यमंत्री बनाए गए थे. बता दें कि उत्तराखंड के इतिहास में अब तक नारायण दत्त तिवारी ही ऐसे अकेले नेता रहे हैं, जिन्होंने अपने मुख्यमंत्री का कार्यकाल पूरे पांच साल तक पूरा किया है.

तिवारी 2 मार्च 2002 से लेकर 7 मार्च 2007 तक राज्य के मुख्यमंत्री थे. साल 2007 में विधानसभा चुनाव में बीजेपी की जीत हुई थी. जिसके बाद भुवन चंद्र खंडूरी को राज्य का नया सीएम बनाया गया था. लेकिन उन्हें भी बीच में ही पद छोड़ना पड़ा था. बता दें कि 7 मार्च, 2007 से लेकर 26 जून 2009 तक यानी कुल 2 साल 111 दिन तक खंडूरी राज्य के सीएम पद पर थे. उनके बाद रमेश पोखरियाल को बीजेपी ने मुख्यमंत्री बनाया था. उन्होंने भी 27 जून, 2009 से लेकर 10 सितंबर, 2011 तक यानी कुल 2 साल 75 दिनों तक राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सेवा की थी. लेकिन चुनावों से ठीक पहले उन्हें हटाकर फिर से भुवन चंद्र खंडूरी को मुख्यमंत्री बना दिया गया था. इस बार उनका कार्यकाल 11 सितंबर 2011 से 13 मार्च 2012 तक (184 दिन) का था।

हरीश रावत एक कार्यकाल में तीन बार बने मुख्यमंत्री

तीसरी विधानसभा का गठन होने के बाद फिर से कांग्रेस की सरकार बनी और विजय बहुगुणा को पार्टी ने राज्य का नया मुख्यमंत्री बनाया था. लेकिन उन्हें भी 1 साल 324 दिन के बाद पद से इस्तीफा देना पड़ा था. फिर बहुगुणा 13 मार्च 2012 से लेकर 31 जनवरी 2014 तक सीएम पद पर थे. उनके बाद हरीश रावत को नया मुख्यमंत्री बनाया गया था, बता दें कि हरीश रावत सियासी उठापटक के बीच इसी विधान सभा के कार्यकाल में तीन बार मुख्यमंत्री बने थे. हरीश रावत ने सबसे पहले 1 फरवरी, 2014 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी.

जिसके बाद 27 मार्च 2016 को राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया था, लेकिन हाईकोर्ट के फैसले के बाद 25 दिन में ही उसे हटा दिया गया. इस तरह रावत ने एक दिन के लिए दूसरी बार 21 अप्रैल 2016 को सीएम पद की शपथ ली थी. 22 अप्रैल को फिर से राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया था, जो 19 दिन चक चला था. अदालती कार्यवाही के बाद फिर से रावत ने 11 मई, 2016 को सीएम पद की कमान संभाली और वह 18 मार्च, 2017 तक इस पद पर थे.

इसके बाद फिर चौथी विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस की हार हुई और बीजेपी की जीत हुई थी. बीजेपी पार्टी की तरफ से त्रिवेंद्र सिंह रावत को सीएम बनाया गया था. उन्होंने 18 मार्च, 2017 को सीएम पद की शपथ ली. लेकिन उन्होंने 10 मार्च को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था. उनके बाद तीरथ सिंह रावत को सीएम बनाया गया, जिन्होंने 2 जुलाई को सबसे छोटा कार्यकाल (मात्र 114 दिन) के बाद इस्तीफा दे दिया था. इसके बाद बीजेपी ने पुष्कर सिंह धामी को राज्य का मुख्यमंत्री बनाया है. 2022 में हुए विधानसभा में भी बीजेपी ने बहुमत से सरकार बनाई और फिर से पुष्कर सिंह धामी को मुख्यमंत्री बनाया है जो मौजूदा वक़्त में एक मजबूत स्थिति में नज़र आ रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम को दी स्थापना दिवस की बधाई

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 18 दिसंबर , मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम के 23वें स्थापना दिवस समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री को जल विद्युत निगम के एम.डी ने 20 करोड़ 09 लाख 58 हजार 211 रूपये का लाभांश का चेक भेंट किया। मुख्यमंत्री ने यूजेवीएनएल के कारपोरेट भवन का लोकार्पण के साथ ही सी.एम.आर के तहत सरस्वती विद्या इण्टर कॉलेज भानियावाला को दी गई बस को फ्लेग ऑफ कर रवाना किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि देहरादून में आयोजित हुए ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में लक्ष्य से अधिक 3.50 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों में ऊर्जा क्षेत्र के लिए एक लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव शामिल है। उन्होंने जल विद्युत निगम से 2030 तक विद्युत उत्पादन के लक्ष्य 2200 मेगावाट को और अधिक बढ़ाये जाने पर बल देते हुए अपेक्षा की कि जल विद्युत निगम प्रदेश में स्थापित तथा नये स्थापित होने वाले उद्योगों की विद्युत जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान देना सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी विभागों एवं संस्थानों से बेहतर वर्क कल्चर के साथ जीरो पेडेंसी का संकल्प लेने को भी कहा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य स्थापना के उपरांत यूजेवीएनएल का गठन उत्तराखण्ड को सही अर्थों में ऊर्जा प्रदेश बनाने के लिए किया गया था। जिसे निगम द्वारा प्रतिवर्ष किए जाने वाले अपने रिकार्ड उत्पादनों के माध्यम से साबित भी किया जा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि निगम अपनी बेहतर कार्यसंस्कृति और कुशल प्रबन्धन के बल पर इसी प्रकार ऊर्जा के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित करता रहेगा। राज्य निर्माण के समय ऊर्जा क्षेत्र को हमारी आर्थिकी का मूल आधार माना गया था, परंतु हमारा यह लक्ष्य अभी तक पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाया है। अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर यह विचार करें कि इस दिशा में कैसे तेजी से आगे बढ़ा जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में ऊर्जा क्षेत्र की विकास योजनाओं को समय पर पूर्ण करने में हमें केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर आवश्यक सहयोग दिया जा रहा है।इसका उदाहरण लखवाड़ बहुउद्देश्यीय जल विद्युत परियोजना है जिसमें तेजी से कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना से करीब 475 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन हो सकेगा, जो हमारे प्रदेश के लिए ऊर्जा क्षेत्र में नए अवसर सृजित करेगा। इसके साथ ही जमरानी बांध परियोजना के लिए भी केंद्र सरकार की मंजूरी मिल चुकी है, जिस पर भी कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऊर्जा विभाग में 2008 में केंद्र सरकार द्वारा जल विद्युत नीति लायी गयी थी, जिसे लागू नहीं किया गया था, लेकिन हमने कैबिनट की बैठक में जल विद्युत नीति लाकर उसे लागू करने का प्रयास किया है। उन्होंने यूजेवीएनएल सहित अन्य संस्थानों को अपनी संपत्तियों का भी ध्यान रखने को कहा। ऐसे कई मामले संज्ञान में आ रहे है, जिनमें संस्था की जमीन पर अवैध अतिक्रमण हुआ है। संस्थानों को सरकार की जमीन मिलती है तो उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उनकी है, इसलिए सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्र का अवलोकन करे और जमीनों को कब्जामुक्त करायें। उन्होंने कहा कि सरकार किसी भी सूरत में अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें ऊर्जा के क्षेत्र में ज्ञान, विज्ञान एवं नवाचार के साथ ग्रीन इनर्जी के क्षेत्र में भी इकोलॉजी तथा इकोनामी का समन्वय बनाकर आगे बढ़ना होगा। हमे राज्य की जीडीपी को दुगना करने की दिशा में कार्य करना है। इस दिशा में प्रधानमंत्री श्री मोदी हमें प्रेरणा देने के साथ कर्तव्य बोध भी कराते है। हमें इस चुनौती का मिलकर सामना करना है।

अपने संबोधन में यूजेवीएन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक संदीप सिंघल ने कहा कि यूजेवीएन लिमिटेड का गठन उत्तराखंड को ऊर्जा प्रदेश बनाने तथा राज्य को विद्युत उत्पादन की नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने हेतु किया गया था जिसे निगम द्वारा अपने रिकॉर्ड उत्पादनों द्वारा बार-बार साबित भी किया गया है। श्री संदीप सिंघल ने बताया कि निगम की परियोजनाओं द्वारा वर्ष 2022-23 में 5433 मिलियन ऊर्जा का उत्पादन करते हुए 115.64 करोड़ रुपए का लाभ अर्जित किया गया। उन्होंने कहा कि यूजेवीएन लिमिटेड द्वारा लगातार पिछले सात वर्षों से राज्य सरकार को लाभांश प्रदान किया जा रहा है। संदीप सिंघल ने यूजेवीएन लिमिटेड को हनोल त्यूणी जल विद्युत परियोजना एवं लखवाड़ पंप स्टोरेज परियोजना सहित यूजेवीएन लिमिटेड तथा टीएचडीसी के संयुक्त उपक्रम को 489 मेगावाट की तीन जल विद्युत परियोजनाएं तथा 1230 मेगावाट की दो पंप स्टोरेज परियोजनाएं आवंटित करने पर माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद भी दिया।

हिन्दू शादी में क्यों निभाई जाती है कन्यादान की रस्म ?

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , एक भावुक पल और नाजुक रस्म जब पिता अपनी बेटी का हाथ वर के हाथ में सौंपता है , ये ऐसी रस्म है जो कि पिता और बेटी के भावनात्मक रिश्ते को दर्शाती है.हिंदू धर्म में विवाह के दौरान बहुत सी रस्में निभाई जाती हैं जिनकी अपनी अलग मान्यता है. कहा जाता है कि जब तक सभी रस्में पूरी नहीं हो जाती तब तक कन्या और वर को पति-पत्नी का अधिकार प्राप्त नहीं होता है. हिंदू धर्म में शादी की हर रस्म और रिवाज का अपना महत्व होता है लेकिन इन सभी रस्मों में से कन्यादान की रस्म काफी महत्वपूर्ण होती है.कन्यादान का अर्थ होता है कन्या का दान देना. सभी दानों में से यह दान सबसे बड़ा दान माना जाता है.

कैसे शुरू हुई कन्यादान की रस्म?

विवाह में वर को भगवान विष्णु और वधु को मां लक्ष्मी का दर्जा दिया गया है. वहीं, मान्यताओं के मुताबिक विष्णु रूपी वर की बात करें तो विवाह के समय वर कन्या के पिता को यह आश्वासन देता है कि वो उम्र भर उनकी बेटी को खुश रखेगा और उसे कभी भी कोई विपदा नहीं आने देगा. इतना ही नहीं, दोनों एक दूसरे के परिवार की जिम्मेदारी को निभाने में एक दूसरे का साथ देंगे.हिंदू धर्म में कन्या दान को महादान माना गया है. ऐसे में जिन माता पिता को कन्यादान करने का मौका प्राप्त होता है, वो काफी भाग्यशाली होते हैं. ऐसा माना जाता है कि जो माता पिता कन्यादान करते हैं, उनके लिए इससे बड़ा पुण्य कुछ नहीं है. यह दान उनके लिए मोक्ष की प्राप्ति के द्वार खोलता है.

पौराणिक कथा की मानें तो दक्ष प्रजापति ने अपनी कन्याओं का विवाह करने के बाद कन्यादान किया था. ब्रह्मांड के 27 नक्षत्रों को प्रजापति की पुत्रियां कहा गया है, जिनका विवाह चंद्रमा से हुआ था. इन्होंने ही सबसे पहले अनी कन्याओं को चंद्रमा को सौंपा था ताकि सृष्टि का संचालन आगे बढ़े और संस्कृति का विकास हो. हिंदू धर्म ग्रंथों के मुताबिक, कन्यादान को महादान की श्रेणी में रखा गया है. क्योंकि इससे बड़ा दान कोई नहीं हो सकता. शास्त्रों में कहा गया है कि जब पूरे विधि विधान के साथ कन्या के माता पिता कन्यादान करते हैं तो इससे उनके परिवार को भी सौभाग्य की प्राप्ति होती है.

सचिव दीपक कुमार के सख्त तेवर, मुख्यमंत्री की घोषणाओं को प्राथमिकता से पूर्ण करने तथा सीएम हेल्पलाइन को पेंडेंसी में न रखने पर गंभीर

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

पौड़ी गढ़वाल 17 दिसंबर ।उपरोक्त दिशा - निर्देश सचिव कार्यक्रम क्रियान्वयन विभाग उत्तराखंड शासन, श्री दीपक कुमार द्वारा श्रीनगर के श्रीकोट बेस चिकित्सालय में आयोजित की गई विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा बैठक में दिए।सचिव ने सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि मुख्यमंत्री घोषणाओं से संबंधित जितने भी कार्य हैं उनको प्राथमिकता से पूर्ण करें तथा उनकी अनुपालन आख्या भी समय से प्रेषित करें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री घोषणाओं से संबंधित जितने भी कार्य गतिमान हैं उनको शीघ्रता से पूर्ण करें।

उन्होंने लोक निर्माण विभाग, पेयजल निगम, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जल संस्थान, सिंचाई विभाग, लघु सिंचाई, ग्रामीण निर्माण विभाग आदि विभिन्न निर्माणदाई विभागों और एजेंसियों को निर्माण कार्यों में गुणवत्ता को बेहतर बनाए रखते हुए कार्य करने के निर्देश दिए। साथ ही समाज कल्याण, बाल विकास, खाद आपूर्ति विभाग, स्वास्थ्य, शिक्षा विभाग, पशुपालन, पंचायतीराज आदि ऐसे विभाग जो जनहित की और महिला, बाल विकास, गरीबी उन्मूलन की विभिन्न योजनाएं संचालित करते हैं वे विभाग उन कल्याणकारी योजनाओं का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन करना सुनिश्चित करें। उन्होंने उद्यान, कृषि और पर्यटन विभाग को जनपद में उनसे संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए सबसे अनुकूल बताते हुए विशेष प्रयास करने के निर्देश देते हुए कहा कि इन विभागों के पास जनपद में बेहतर आउटकम प्राप्त करने का अच्छा अवसर है इसलिए ये विभाग स्थानीय धरातल और व्यवहारिकता के अनुकूल रिसर्च करें, कार्य योजना बनाएं और उसका बेहतर क्रियान्वयन करें।

उन्होंने सभी नगर निकायों को निर्देशित किया कि शहरों और कस्बों में जितने भी सामुदायिक शौचालय हैं उनका बेहतर तरीके से रखरखाव और साफ- सफाई बनाए रखना सुनिश्चित करें, इसके लिए शिफ्टवार कार्मिकों की तैनाती करने को कहा।उन्होंने समाज कल्याण विभाग को विधवा और दिव्यांग लाभार्थियों को समर्पित योजनाओं का समय-समय पर फीडबैक लेते हुए कार्य करने के निर्देश दिए।

उन्होंने विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लोगों को अपनी- अपनी विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान करने तथा मेरी योजना ई - बुक को लोगों से साझा करते हुए विभिन्न योजनाओं की औपचारिकताओं, आवेदन पत्रों को भरने और उसका लाभ लेने के बारे में लोगों को इस दौरान विशेष रूप से बताने के निर्देश दिए।सचिव ने जलागम, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, मनरेगा इत्यादि योजनाओं को बेहतर डप्टेलिंग (समरीकरण) के माध्यम से संचालित करते हुए बेहतर आउटकम प्राप्त करने के अधिकारियों को निर्देश दिए।

उन्होंने पशुपालन विभाग को निर्देशित किया कि बद्री गाय को बढ़ावा देने के लिए और उसके दुग्ध और उसे निर्मित उत्पादों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए गंभीरता से कार्ययोजना बनाते हुए उसे क्रियान्वित करने को कहा।उन्होंने आयुर्वेद विभाग को एलोपैथिक चिकित्सकों को भी समय-समय पर आयुष से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करने के निर्देश दिए जिससे आयुष और एलोपैथी दोनों चिकित्साओं के समन्वय से लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सके।

इस दौरान सचिव ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया की योजनाओं, कार्यों तथा निर्माण कार्यों के क्रियान्वयन के दौरान यदि कोई व्यवहारिक, प्रशासनिक अथवा अन्य प्रकार की ऐसी दिक्कत आती है जिसका शासन स्तर पर समाधान अपेक्षित हो तो उसके लिए उचित माध्यम से शासन को सिफारिश प्रेषित करें तथा दो या दो से अधिक विभागों के समन्वय से संचालित किए जाने वाले कार्यों को बेहतर समन्वय से क्रियान्वित करने के लिए अच्छे कॉर्डिनेशन के साथ कार्य करने के निर्देश दिए।इस दौरान अपर जिलाधिकारी ईला गिरी, अपर पुलिस अधीक्षक जया बलूनी, जिला विकास अधिकारी मनविंदर कौर, उप जिलाधिकारी नवाजिश खलिक सहित विभिन्न विभागीय अधिकारी समीक्षा बैठक में उपस्थित थे। इससे पहले सचिव द्वारा उपरोक्त बिंदुओं पर यात्रा पड़ाव Kaudiyala में बैठक लेते हूए टिहरी जिले के नरेंद्रनगर/ देवप्रयाग/ Kirtinagar तहसील/ विकासखंड के अधिकारियों को दिशा निर्देश दिये गये.

अब गली गली दुकान खोलेंगे अंबानी, क्या आप हैं तैयार ?

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , देश के सबसे अमीर आदमी मुकेश अंबानी ने एक बार फिर से बाजार में उथल पुथल मचाने की तैयारी कर ली है. उनकी कंपनी रिलायंस रिटेल देश की सबसे बड़ी कपड़े बेचने वाली कंपनी है. इसके 4000 से ज्यादा स्टोर देशभर में हैं. रिलायंस ट्रेंड्स (Reliance Trends) फिलहाल सबसे बड़ी रिटेल फैशन चेन है. अब कंपनी अपने लगभग 500 नए स्टोर टियर-2 और 3 जैसे छोटे शहरों और कस्बों में भी खोलने वाली है. इसके लिए कंपनी फ्रेंचाइजी बांटेगी.

ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचेगी कंपनी

रिलायंस रिटेल ने छोटे शहरों और कस्बों में पकड़ बनाने के लिए 'फैशन वर्ल्ड बाय ट्रेंड्स (Fashion World by Trends)' के नाम से ये नए स्टोर खोलेगी. मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाली कंपनी पहली बार स्टोर फॉर्मेट में उतरने जा रही है. कंपनी ने बिजनेस मॉडल भी तैयार कर लिया है. फ्रेंचाइजी मॉडल अपनाकर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक रिलायंस ट्रेंड्स की पहुंच बनाई जाएगी. कंपनी को वी मार्ट रिटेल से सीधी टक्कर लेनी पड़ेगी.

फ्रेंचाइजी बांटेगी रिलायंस ट्रेंड्स

कंपनी जानती है कि हर जगह अपना स्टोर खोलना आसान नहीं है. ऐसे में जिन जगहों पर कंपनी का स्टोर नहीं है, वहां फ्रेंचाइजी बांटी जाएगी. कंपनी ने हाल ही में सिलिगुड़ी, धुले और औरंगाबाद में 'फैशन वर्ल्ड बाय ट्रेंड्स' स्टोर खोले हैं. कंपनी का मानना है कि छोटे और मध्यम स्तर वाले शहरों के लोगों का जीवन स्तर तेजी से बढ़ रहा है. यहां के लोग भी ब्रांडेड कपड़े चाहते हैं. ऐसे में यह सही समय है अपने ब्रांड को तेजी से इन लोगों को पहुंचाने का.

2600 ट्रेंड्स स्टोर खोल चुकी है कंपनी

फिलहाल रिलायंस के छोटे शहरों में करीब 2,600 ट्रेंड्स स्टोर्स हैं. हालांकि, 'फैशन वर्ल्ड बाई ट्रेंड्स' स्टोर इनसे बिलकुल अलग होगा. ऐसे स्टोर्स सिर्फ 5000 स्क्वायर फीट एरिया में भी खोले जा सकेंगे. ट्रेंड्स के स्टोर काफी बड़े होते हैं. योजना के मुताबिक, इसी महीने कंपनी 20 ऐसे स्टोर खोल देगी. साल 2024 में 100 से ज्यादा स्टोर खुलेंगे. ये सभी उन्हीं शहरों में होंगे जहां अभी ट्रेंड्स के स्टोर नहीं हैं. अगर अच्छी रही तो एक ही शहर में ज्यादा स्टोर भी खोले जा सकते हैं.

अभिनेता अनुपम खेर से मिले डीजी सूचना बंशीधर तिवारी, फिल्म पालिसी पर हुयी चर्चा

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 18 दिसंबर , उत्तराखंड फिल्म विकास परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और महानिदेशक सूचना बंशीधर तिवारी ने प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अनुपम खेर से मुलाकात की । एक्टर अनुपम खेर अपनी एक नई फिल्म की लोकेशन रेकी के सिलसिले में आजकल उत्तराखंड के विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर रहे हैं ।बंशीधर तिवारी ने अनुपम खेर को उत्तराखंड की फिल्म नीति की जानकारी देते हुए उन्हें उनकी नई फिल्म के लिए शुभकामनाएं दी । डीजी सूचना ने बताया कि उत्तराखंड की प्रस्तावित फिल्म नीति में नई फिल्म लोकेशनों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रावधान किया गया है । इसके अलावा उत्तराखंड के कलाकारों और क्रू मेंबर को शामिल करने पर भी विशेष अनुदान की व्यवस्था की गई है ।

टैलेंट टेक्नोलॉजी और ट्रेनिंग पर सरकार का फोकस - बंशीधर तिवारी

उन्होंने बताया कि राज्य में फिल्म निर्माण को लेकर एक 360 डिग्री इकोसिस्टम का निर्माण किया जा रहा है जिसमें बाहरी फिल्म निर्माता के साथ-साथ स्थानीय फिल्म निर्माताओं और कलाकारों तथा टेक्निशियनों को विशेष मौके मिलेंगे । उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 3 टी यानी टैलेंट टेक्नोलॉजी और ट्रेनिंग इन तीनों पक्षों पर मजबूती से काम करने के निर्देश दिए हैं । मुख्यमंत्री के विजन के अनुरूप नई फिल्म नीति लाई जा रही है जिसमें बहुत से प्रावधान ऐसे हैं जो सिनेमा और कंटेंट निर्माण की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप है । नई पॉलिसी में वेब सीरीज , डॉक्युमेंट्री और लघु फिल्मों को भी स्थान दिया जा रहा है । अनुपम खेर ने बताया कि उनकी नई फिल्म की शूटिंग अप्रैल माह से प्रस्तावित है और 90% से अधिक शूटिंग उत्तराखंड में ही करने की योजना हैं ।

फिल्म विकास परिषद के नोडल अधिकारी डॉ नितिन उपाध्याय भी रहे मौजूद

उनकी आगामी फिल्म सैन्य पृष्ठभूमि पर आधारित कहानी पर है जिसके लिए उन्होंने लैंसडाउन और उसके आसपास का लोकेशन रेकी किया है । उन्होंने उत्तराखंड में फिल्म निर्माण से संबंधित माहौल की सराहना करते हुए कहा कि उत्तराखंड तेजी से एक लोकप्रिय फिल्म शूटिंग डेस्टिनेशन बनता जा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सरकार की फिल्म फ्रेंडली नीतियों से आने वाले समय में उत्तराखंड देश का सर्वश्रेष्ठ शूटिंग डेस्टिनेशन बनकर उभरेगा। तिवारी ने राज्य पुष्प ब्रह्मकमल की अनुकृति और शॉल भेंट कर खेर का स्वागत किया।

संपादकीय

दिल के जोखिम

भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के बारे में अक्सर कहा जाता रहा है कि वे दिल की बीमारियों की दृष्टि से ज्यादा संवेदनशील होते हैं। देश-विदेश में हुए हाल के अध्ययनों ने इस तथ्य की पुष्टि ही की है। पिछले दिनों आई एनसीआरबी की रिपोर्ट ने भी इस पर मोहर लगायी है। निस्संदेह, देश में कार्डियो वैस्कुलर डिजीज यानी सीवीडी अर्थात दिल से जुड़े रोगों से होने वाली जीवन क्षति एक गंभीर समस्या बनी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह आंकड़ा चिंता बढ़ाता है कि दुनिया भर में सीवीडी से होने वाली मौतों का पांचवां हिस्सा भारत से है। जो इस संकट की गंभीरता को दर्शाता है। कोरोना संकट के बाद भी देश में हृदयाघात से मरने वालों की संख्या में भी तेजी देखी गई है। वैश्विक रोगों के दबाव विषयक अध्ययन की रिपोर्ट इस संकट की हकीकत बयां कर देती है। जिसमें कहा गया कि वैश्विक स्तर पर जहां प्रति लाख जीवन क्षति का औसत 235 है, वहीं भारत में यह 272 है। दूसरी ओर एनसीआरबी आंकड़े इस संकट की तस्वीर उकेर देते हैं। जिसमें कहा गया है कि हृदयाघात से अचानक होने वाली जीवन क्षति का आंकड़ा जहां 2021 में साढ़े पचास हजार था, वह 2022 में बढ़कर साढ़े छप्पन हजार के करीब पहुंच गया। दरअसल, दिल से जुड़े रोग हमारी जीवनशैली में आए बदलावों की भी देन है। लगातार जटिल होती जीवन व कार्य परिस्थितियां व अराजक खानपान भी इस समस्या के मूल में है। हमारे जीवन में घटता शारीरिक श्रम व खानपान की गुणवत्ता में गिरावट भी समस्या बढ़ाती है। इस जटिल समस्या का एक सकारात्मक पक्ष भी है। चिकित्सा विशेषज्ञ बताते रहे हैं कि सजगता व कुछ प्रयासों से इस जीवन क्षति को टाला जा सकता है। जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन यानी सीपीआर की होती है। यदि समय रहते हृदय रोगी को सीपीआर जैसी प्राथमिक चिकित्सा सहायता उपलब्ध करा दी जाए तो उसकी जान बचाई जा सकती है। व्यक्ति की सांस रुके या दिल की धड़कनें बंद हो रही हों, तो यह तकनीक खासी लाभप्रद साबित हो सकती है। जरूरी नहीं है कि मरीज को इसको देने के लिये तुरंत अस्पताल ले जाना हो या किसी उपकरण की जरूरत पड़े। लेकिन विडंबना यह है कि बहुत कम लोगों को इसका प्रशिक्षण दिया गया है। भारत में इस संबंध में जागरूकता भी बेहद कम है। यद्यपि कुछ चिकित्सा व सामाजिक संगठन इस बाबत लगातार जागरूकता अभियान चलाते रहते हैं, लेकिन गांव-देहात में इसका दायरा बढ़ाने की जरूरत है। विकसित देशों में सार्वजनिक स्थलों पर ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफाइब्रिलेटर्स की सुविधा उपलब्ध होती है। जिसके लिये लोगों को जागरूक व प्रशिक्षित किया जाता है। दरअसल, यह एक ऐसा उपकरण है जिसे लोग अपने साथ लेकर चल सकते हैं और सांसों को प्रवाह बाधित होने पर इलेक्ट्रिक शॉक के जरिये उसे नार्मल करने के प्रयास होते हैं। लेकिन इसके साथ ही हमें अपने खानपान, सहज व्यवहार और शारीरिक श्रम बढ़ाने पर ध्यान देना होगा।

दैनिक न्यूज़ वायरस

संपादक : मौ.सलीम सैफी, **कार्यकारी संपादक :** आशीष कुमार तिवारी न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मौ.सलीम सैफी द्वारा विश्वनाथ प्रिंटर्स, अजबपुर कलां, देहरादून से प्रकाशित एवं न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड, 48/3 बलबीर रोड, डालनवाला, देहरादून से मुद्रित। **फ़ोन :** 0135-4066790, 2672002, **RNI No. :** UT-THIN/2012/44094
Cert. Ser. No. : 31406 **E-mail :** dainiknewsvirus@gmail.com
Website : www.newsvirusnetwork.com **YouTube :** TV News Virus
न्याय क्षेत्राधिकार : जनपद देहरादून (उत्तराखंड), भारत

प्रधानमंत्री मोदी को ताकतवर बनायें : सतपाल महाराज

सतपुली में विकसित भारत संकल्प यात्रा में बोले सतपाल महाराज

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

सतपुली (पौड़ी) , 18 दिसंबर , मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आम आदमी तक पहुंचाएं ताकि लोगों को इसका लाभ मिल सके। ये बात चौबट्टाखाल विधायक और प्रदेश के कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज नेअपने विधानसभा क्षेत्र चौबट्टाखाल के अन्तर्गत सतपुली के हण्डुल ग्राम सभा में विकसित भारत संकल्प यात्रा में प्रतिभाग करते हुए कही। उन्होंने केन्द्र की मोदी सरकार और राज्य की धामी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों की जानकारी देते हुए क्षेत्रीय जनता से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सहयोग और शक्ति देने की बात कही।कैबिनेट मंत्री महाराज ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। जम्मू कश्मीर से धारा 370 को खत्म कर केंद्र की भाजपा सरकार ने एक बड़ा काम किया है। अब वह हमारे देश का अभिन्न अंग बन गया है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से नवरात्रों में सारे देवताओं ने भगवती को विभिन्न प्रकार के आयुक्त और शास्त्र प्रधान किये और भगवती प्रचंड शक्तिशाली असुरों का वध करती रही इसी प्रकार हमने भी प्रधानमंत्री को ताकत देकर शक्तिशाली बनाना है ताकि वह भारत का अनवरत विकास करते रहें।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य की भाजपा सरकार मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में विकास के नए आयाम स्थापित कर रही है। केन्द्र एवं राज्य सरकार के कार्यकाल में रोजगार, शिक्षा, सड़क, चिकित्सा, पर्यटन समेत विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास कार्य प्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होंगे। उन्होंने कहा कि चौबट्टाखाल विधानसभा में सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। क्षेत्र को पर्यटन और एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। क्षेत्र को टूरिज्म के मानचित्र पर लाने के लिए कई योजनाएं गतिमान हैं। केंद्र के सहयोग से मोदी जी के निर्देशन में राज्य चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर है। काबीना मंत्री सतपाल महाराज ने बीपीएल परिवारों को उज्ज्वला योजना के अंतर्गत गैस कनेक्शन वितरित किए।

महाराज ने भाजपा कार्यकर्ताओं और पदाधिकारी का आह्वान करते हुए कहा कि वह प्रदेश की धामी सरकार और केंद्र की मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आम आदमी तक पहुंचाएं ताकि लोगों को इसका लाभ मिल सके। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को भी चेतावनी दी कि वह भी समस्याओं का समाधान करने में तत्परता दिखाएं और कार्यकर्ताओं के फोन जरूर उठाएं। इस अवसर पर भाजपा मण्डल अध्यक्ष सरेन्द्र सिंह बिष्ट, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य वेद प्रकाश वर्मा, हण्डुल की ग्राम प्रधान रेखा देवी, वासुदेव भट्ट, राजी देवी, राजेन्द्र रावत, अशोक कुमार, पूर्व जिला पंचायत सदस्य उपेन्द्र सहित भाजपा के अनेक कार्यकर्ता बूथ अध्यक्ष उपस्थित थे।

राहुल रॉय को स्तब्ध कर गया देहरादून के युवाओं का हुनर

बॉलीवुड एक्टिंग स्कूल ऑफ़ आर्ट्स के कार्यक्रम में पहुंचे थे आशिकी फेम राहुल रॉय

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून। आशिकी फेम एक्टर राहुल रॉय को देहरादून के युवाओं के हुनर ने स्तब्ध कर दिया। युवाओं के बीच बढ़ रहे क्लासिकल म्यूजिक और डांस के रुझान को देख हैरान हुए राहुल रॉय।बॉलीवुड एक्टिंग स्कूल ऑफ़ आर्ट्स की ओर से आयोजित टैलेंट हंट के फिनाले को जज करने पहुंचे राहुल रॉय ने कहा की वे बहुत ही हैरान है कि देहरादून के युवाओं में क्लासिकल म्यूजिक और डांस के प्रति इतना रुझान है। उन्होंने कहा की यहां के युवाओं में हुनर देखते ही बनता है। उन्होंने अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स के बारे में बात करते हुए कहा की वे जल्द ही उनकी सुपरहिट फिल्म जुनून का सिक्वल ले कर आ रहे है। कार्यक्रम के आयोजक गुरचरण लाल सदाना,(निर्माता) जुल्फूकर टाइगर, (निदेशक ,हिमांशु नौरियाल, (संरक्षक एवम सलाहकार) एवम श्री शुभम सैनी;(सह- निदेशक)। इसके अलावा ₹टीम बॉलीवुड एक्टिंग स्कूल आफ आर्ट्स₹ एवं ₹अपना परिवार₹ः (एक सामाजिक संस्था) के सभी नुमाइंदों ने बढ़ चढ़कर और जी लगाकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना संपूर्ण सहयोग दिया। टैलेंट हंट के मिस आईकॉनिक में प्रथम स्थान पर माही सोनी, द्वितीय स्थान पर वाणी और तृतीय स्थान पर वंशिका शर्मा रहीं वहीं मिस्टर आईकॉनिक फ्यूचर कॉन्टेस्ट सीजन द्वितीय में आशीष चौहान, पंकज पंत एवं तीसरे स्थान पर आकाश धीमान रहे। मिसेज आईकॉनिक में दुपाली सिंह प्रथम रीना शाह द्वितीय व डिंपल तृतीय स्थान पर रहीं। सब जूनियर ग्रुप में प्रथम स्थान पर आरोही पंडित, दूसरे स्थान पर अंशिका मनवाल एवं तीसरे स्थान पर आराध्या पाई ने जगह बनाई।

युवाओं में रोमांटिक अट्रैक्शन की संभावना पर ताज़ा रिसर्च

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 18 दिसंबर , इसमें कोई दो राय नहीं कि प्यार की पहली सीढ़ी दोस्ती होती है। इसलिए कई सारे लोग अपने बेस्ट फ्रेंड या बचपन के दोस्त से शादी भी कर लेते हैं। यहां तक की फिल्मों में भी इस बात का जिक्र खुब होता है कि लड़का और लड़की सिर्फ एक अच्छे दोस्त नहीं रह सकते हैं। ऐसे में भले ही आप लोगों की सोच को खराब बताकर अपोजिट जेंडर दोस्त के साथ अपनी फ्रेंडशिप को सबसे अलग बता दें, लेकिन इससे सच्चाई बदल नहीं जाती है। और वास्तव में यह सच्चाई क्या है, इसका पता आप इस स्टडी से लगा सकते हैं।

स्टडी में क्या खुलासा हुआ

जर्नल ऑफ सोशल एंड पर्सनल रिलेशनशिप्स में प्रकाशित स्टडी के अनुसार, लड़का और लड़की दोस्त नहीं हो सकते हैं, इस दावे में कुछ सच्चाई हो सकती है। भले ही आप सोच लें कि आप अपोजिट जेंडर के साथ सिर्फ दोस्त बनकर रह सकते हैं, लेकिन रोमांस की संभावना कुछ ही दूरी पर होती है। खासतौर पर यदि आप बेस्ट फ्रेंड हैं।

जस्ट फ्रेंड बनकर नहीं रह पाते लड़के

इन परिणामों से पता चलता है कि लड़कियों की तुलना में लड़कों को अपने अपोजिट जेंडर फ्रेंड के साथ सिर्फ दोस्त बने रहने में ज्यादा कठिनाई होती है। 88 अंडर ग्रेजुएट लड़के और लड़कियों से अपोजिट सेक्स फ्रेंडशिप पर सवालों को पूछने के बाद शोधकर्ताओं ने जाना कि लड़के अपनी फीमेल फ्रेंड्स के साथ रोमांस के अवसर ज्यादा तलाश करते हैं। वहीं, ज्यादातर लड़कियां अपने मेल फ्रेंड्स के साथ रोमांस के बार में नहीं सोचती हैं।

शादीशुदा पुरुष और महिला भी नहीं रह सकते दोस्त

249 वयस्कों (जिनमें से कई शादीशुदा थे) से अपोजिट जेंडर के साथ दोस्ती करने के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को लिस्ट करने के लिए कहा गया। जिसमें लोगों ने नकारात्मक पहलुओं में रोमांटिक अट्रैक्शन की संभावना सबसे ज्यादा बतायी। इस स्टडी में भी पुरुष को महिलाओं की तुलना में अपने अपोजिट जेंडर के साथ सिर्फ दोस्त बने रहने में अधिक परेशानियों का सामना करता पाया गया।